हिंदी एवं भाषा विज्ञान विभाग

रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर म.प्र

एम.ए. हिंदी पाठ्यक्रम

हिंदी साहित्य में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के उद्देष्य

हिंदी साहित्य में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम कार्यक्रम का उद्देष्य है–

ज्ञान के विविध आयामों का स्पष्टीकरण, परिपक्व मस्तिष्क का निर्माण, कौषल विकास, वृहद् दृष्टिकोण, अध्ययन के द्वारा प्राप्त तथा अर्जित जीवन मूल्यों का अपने जीवन तथा व्यवहार में सम्मिश्रण, व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास एवं समाज तथा राष्ट्रोपयोगी नागरिक तैयार करना है, जिन्हें निम्नांकित बिंदुओं में और अधिक स्पष्ट किया जा सकता है–

- ☐ विद्यार्थियों को संवेदनशील नागरिक बनाना।
- ☐ एक कुशल वक्ता तथा आकर्षक स्वावलंबी व्यक्तित्व का निर्माण करना।
- ☐ समाज और समुदाय के प्रति संवेदनशील दृष्टि का विकास करना।
- ☐ राष्ट्रीय चेतना का विकास करना।
- ☐ मानवीय मूल्यों के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित करना।
- ☐ साहित्य में राष्ट्र और राष्ट्रवाद के सही अर्थों को बताना।

कार्यक्रम अधिगम परिणाम

हिंदी साहित्य में स्नातकोत्तर उपाधि से संबद्ध अधिगम परिणाम इस प्रकार है–

PSO-1. साहित्य संप्रेषण के आधार बिंदुओं की जानकारी देना ताकि साहित्य के संबंध में एक स्पष्ट समझ विकसित हो सके।
PSO-2. हिंदी साहित्य और भाषा का व्यवस्थित और तर्कसंगत ज्ञान कराना ताकि उसके सैद्धांतिक पक्ष और साहित्यिक विकास के संबंध में पर्याप्त जानकारी मिल सके।
PSO-3. साहित्य की विभिन्न विधाओं को पढ़ने और समझने की योग्यता का विकास करना।
PSO-4. साहित्य लेखन की विविध शैली और समीक्षात्मक दृष्टि का विकास करना।

प्रथम सेमेस्टर

प्रथम प्रष्नपत्र . हिंदी साहित्य का इतिहास उद्देष्य

CO. हिंदी साहित्य का इतिहास पूर्व काल की विभिन्न परिस्थितियों का षाष्वत् दस्तावेज है। जिससे तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक स्थिति की जानकारी प्राप्त होती है। समय और विभिन्न कालों के अनुसार साहित्य की विभिन्न प्रवृत्तियों में होने वाले परिवर्तन का अध्ययन किया जा सकता है। इस प्रष्नपत्र में साहित्य के साथ तत्कालीन समाज का अध्ययन अपेक्षित है।

प्रष्नपत्र द्वितीय प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य उद्देष्य

CO. प्राचीन एवं मध्यकालीन कवियों ने आदिकाल और भक्तिकाल दोनों में षौर्य, श्रृंगार एवं भक्ति का सुंदर समन्वय तो हुआ है, साथ ही निर्गुण भक्तिधारा को आगे बढ़ाने एवं सूफी प्रेम की पीर को हर छात्र को समझाया है। रासो काव्य की भी अपनी विषिष्टता है।

प्रष्नपत्र तृतीय हिंदी भाषा का व्याकरण उद्देष्य

CO. हिंदी भाषा के उद्भव और विकास के साथ भारत में व्याकरण का विकास एवं प्रमुख व्याकरणाचार्यों का परिचय देते हुए, हिंदी में षब्द निर्माण करने के लिए व्याकरण आदि को समझना आवष्यक है।

निर्धारित पाठ्यक्रम चतुर्थ प्रष्नपत्र अनुवाद विज्ञान उद्देष्य

CO. हिंदी को रोजगारपरक बनाने के लिए कंप्यूटर प्रोग्रामिंग की जानकारी देने के साथ अनुवाद के सिद्धांत एवं व्यवहार कला का ज्ञान प्रदान करना है।

द्वितीय सेमेस्टर

प्रथम प्रष्नपत्र . हिंदी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल) उद्देष्य

CO. गद्य एवं गद्य की प्रमुख विधाओं का विकास आधुनिक काल अर्थात् 19वीं षताब्दी में हुआ। आधुनिक काल की राजनीतिक, सामाजिक परिस्थितियों का अध्ययन। आधुनिक काव्य की विभिन्न प्रवृत्तियों का अध्ययन।

द्वितीय प्रष्नपत्र . हिंदी उपन्यास एवं लघु कथा साहित्य CO.

उद्देष्य

CO. हिंदी उपन्यास, उपन्यासकारों की रचनाओं की विषेषताएँ। लघु कथा की विषेषताएँ और लघु कथाकारों का परिचय कराना प्रमुख उद्देष्य है।

तृतीय प्रष्नपत्र . भारतीय एवं पाष्चात्य साहित्यषास्त्र उद्देष्य

CO. साहित्य को तैयार करने में या लिखने में कौन कौन से नियम और सिद्धांत का प्रयोग किया जाना चाहिए इसकी समझ पैदा करना और सीखना ताकी छात्र स्वयं भी लेखन की ओर प्रवृत्त हो तो उसे भारतीय साहित्य षास्त्र के अलावा पाष्चात्य सिद्धांत का ज्ञान हो।

चतुर्थ प्रष्नपत्र . हिंदी की उत्पत्ति, विकास और संरचना उद्देष्य

CO. हिंदी भाषा के आधुनिकीकरण एवं मानकीकरण की जानकारी के साथ उसके व्याकरण को समझना अति आवष्यक है विषेषकर व्याकरणिक कोटियों को जानना और उसके अनुसार षुद्ध वाक्य की संरचना करना। हिंदी भाषा की लिपि देवनागरी का ज्ञान, साथ ही तकनीकी की मांग के आधार पर हिंदी में कंप्यूटर प्रणाली का ज्ञान, और केंद्र षासन एवं राज्य षासन के कार्यालयों के लिए रोजगारोंन्मुखी राजभाषा संबंधी ज्ञान प्रदान करना।

तृतीय सेमेस्टर

प्रथम प्रष्नपत्र – आधुनिक हिंदी कवि और उनके काव्य (छायावादी काव्य)

उद्देष्य

CO. आधुनिक काल के प्रारंभिक चरण अर्थात् भारतेन्दु युग से द्विवेदी एवं छायावदी युग की कविता की प्रवृत्तियाँ, प्रमुख कवि और युगीन सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक परिस्थितियों की जानकारी देकर कविता को युगीन संदर्भों से जोड़कर अध्ययन कराना।

द्वितीय प्रष्नपत्र– भाषाविज्ञान उद्देष्य

CO. हिंदी की लिपि देवनागरी है उसके प्रयोग के लिए जिसकी व्यवस्था अर्थात् स्वन, रूप, वाक्य, अर्थ और प्रोक्ति को समझना आवष्यक है। भाषाविज्ञान के ये अंग कहलाते हैं इनके ज्ञान से ही भाषा एवं उसकी व्यवस्था का सम्यक् ज्ञान दिलाया जा सकता।

तृतीय प्रष्नपत्र– नाटक, निबंध और एकांकी

उद्देष्य

CO. भरत मुनि की नाट्य परंपरा, आधुनिक युग तक आते हुए कई पड़ावों को पार कर नए परिवेष और समाज के साथ जुड़ते हुए दृष्य माध्यम तक रंगमंच पर प्रदर्षित किया जाने लगा। इस प्रष्नपत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को उस अतीत के आदर्ष का परिज्ञान कराना तथा वर्तमान को समृद्ध बनाने की प्रेरणा देना पाठ्यक्रम का उद्देष्य है।

चतुर्थ प्रष्नपत्र– लोक साहित्य उद्देष्य

CO. लोक संस्कृति का इतिहास, परंपरा बताते हुए लोक संस्कृति से राष्ट्वाद का ज्ञान कराना। लोक साहित्य का अन्य सामाजिक विज्ञानों के बीच संबंध बताना तथा रंगमंच पर लोक नाट्यों के प्रभाव का अध्ययन कराना।

चतुर्थ सेमेस्टर प्रथम

प्रष्नपत्र–उत्तर छायावाद का इतिहास और काव्य

उद्देष्य

CO. प्रयोगवाद के पुरोधा अज्ञेय ने कविता को ही कवि का परम वक्तव्य माना है। 'तारसप्तक' के संपादक अज्ञेय को पाठ्यक्रम में रखने का उद्देष्य न सिर्फ उनकी कविताओं का बल्कि उस युग चेतना को समझाना। फैंटेसी षैली के साथ हालावाद, प्रगतिवाद, नई कविता, अकविता तथा जनवादी कविता और उनके रचना षिल्प को समझाना प्रमुख उद्देष्य है।

द्वितीय प्रष्नपत्र–पत्रकारिता उद्देष्य

CO. हिंदी को रोजगारपरक बनाने के लिए पत्रकारिता और जनसंचार के अंतर्गत संपादन कला और इसके विविध आधारभूत प्रकारों का वैज्ञानिक प्रषिक्षण देना।

तृतीय प्रष्नपत्र –वर्तमान विमर्ष और हिंदी साहित्य उद्देष्य

CO. वर्तमान साहित्य में चल रहे विमर्ष का ज्ञान कराना, साहित्यकारों के पत्रों की जानकारी पत्र साहित्य ओर डायरी विधा के साथ रेखाचित्र संस्मरण को समझना व उसके लिए प्रेरित करना ही इसका उद्देष्य है।